1.1.1 प्रस्तावना

वर्तमान दौर में इंटरनेट आधारित मीडिया सामाजिक-राजनीतिक जीवन का एक निर्णायक तथ्य बन चुका है। दुनिया भर के विभिन्न देशों में सामाजिक बदलाव के दौरान इंटरनेट आधारित मीडिया का उपयोग बड़े उपकरण के तौर पर किया जा रहा है। आज जब भी मीडिया की बात की जाती है तो मुख्य रूप से सभी का ध्यान मीडिया के नए रूपों पर होता है। संचार के इन रूपों के बारे में बात करते हुये आज के समय की सबसे अधिक परिवर्तनकारी परिघटना पर स्वाभाविक रूप से ध्यान जाता है। आज संचार के जो नए रूप सामने आए हैं वे अपनी प्रकृति से ही वैश्विक हैं। संस्कृति का रूप ज़्यादातर स्थानीय और सामुदायिक होता है। मीडिया अधिकाधिक वैश्विक होता जा रहा है। समाज में होने वाली सांस्कृतिक परिघटनाओं के प्रमुख उपकरण का काम मीडिया करता है।

इस काम को वह उन सूचनाओं और सांस्कृतिक रूपों के जरिये करता है जो वह जनता के बीच पेश करता है। प्रत्येक मीडिया का अपना स्वतंत्र चरित्र है। उसकी निजी माध्यमगत विशेषताएं हैं। मीडिया की खूबी है कि उसके तकनीकी रूपों में अंतर्विरोध नहीं होते। यही वजह है कि हम कंवर्जेंस के युग में पहुँच गए हैं। जहां की इन बदलावों के पीछे विविध प्रकार के इंटरनेट आधारित मीडिया का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। जिसमें यूट्यूब कि भूमिका भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यूट्यूब एक साझा वेबसाइट है। यहाँ उपयोगकर्ता वेबसाइट को देख सकता है, वीडियो अपलोड कर सकता है और वीडियो क्लिप साझा भी कर सकता है। इस प्रकार से यदि किसी एक संस्थान में विद्यार्थियों के लिए भी पढ़ाई की व्यवस्था की जा रही है तथा वहाँ का वीडियो तैयार कर लिया जाए तो बाकी के विद्यार्थियों के लिए भी पढ़ाई का कार्य सुगम हो सकता है।

इस प्रकार न्यू मीडिया के अभिन्न अंग के तौर पर जाना-जाने वाला यूट्यूब द्वारा शैक्षणिक आदान-प्रदान का एक सशक्त माध्यम है। यूट्यूब बहुत सहज, सरल, सुगम माध्यम है। जहां मनोरंजन के आलवा अन्य शैक्षणिक विषयों के वीडियो भी मौजूद हैं। विश्व के उत्कृष्ट शिक्षण संस्थानों द्वारा यूट्यूब वीडियो के माध्यम से विभिन्न प्रकार की सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है। शैक्षणिक आदान-प्रदान के कारकों को यथा शोध पाठ्य, साहित्य इत्यादि से संबंधित करोड़ों वीडियो यूट्यूब पर मौजूद हैं। यह इस बात का सबूत है कि यूट्यूब के माध्यम

से शैक्षणिक बदलाव हो रहा है। लिहाजा यह जानना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि किस प्रकार से यूट्यूब द्वारा शैक्षणिक विकास के संदर्भ में लोगों को लाभ मिल रहा है।

इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर प्रस्तावित शोध में यूट्यूब द्वारा हो रहे शैक्षणिक आदान-प्रदान की प्रभावशीलता एवं अन्य आयामों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाएगा ताकि यूट्यूब के माध्यम से हो रहे शैक्षणिक विकास के विभिन्न परिपप्रेक्ष्यों का विस्तृत अध्ययन सामने आ सके तथा इस साइट का लाभ अधिक से अधिक लोगों द्वारा लिया जा सके। प्रस्तुत शोध निम्नलिखित अध्याय को आधार बनाते हुये प्रस्तुत किया है।

अध्याय परिचय

अध्याय एक -: प्रस्तावना एवं शोध प्रविधि

इस अध्याय के द्वारा शोध विषय की जानकारी तथा उसके विभिन्न पाक्षों को सुगमता से प्रस्तुत किया गया है। इसमें शोध विषय का संक्षिप्त परिचय दिया गया है तथा शोध के लिए प्रयोग की जाने वाली पद्धतियों को प्रस्तुत किया गया है। जिनमें से हैं - शोध से संबंधित प्रस्तावना, शोध प्रविधि, संबंधित साहित्य समीक्षा, शोध उपकलपना, शोध प्रश्न, शोध की प्रासंगिकता, शोध का उद्देश्य आदि को शामिल किया गया है। इस अध्याय में शोध की समस्त प्रारूप जिनसे गुजरते हुये यह शोध कार्य पूर्ण किया गया है को शामिल किया गया है।

अध्याय दो -: यूट्यूब का परिचय एवं परिधि

दूसरे अध्याय में यूट्यूब का समग्र परिचय दिया गया है। इस अध्याय में यूट्यूब का परिचय, यूट्यूब की अवधारणा, यूट्यूब का उद्भव और विकास आदि विषय को समाहित किया गया है। इसके अलावा इंटरनेट के विकास गाथा को भी इसमें शामिल किया गया है, जिसके अंतर्गत इंटरनेट का विकास क्रम, भारत में इंटरनेट को भी शामिल किया गया है। यूट्यूब का उपयोग वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में किया जा रहा है इस विषय को भी शोध में बताया गया है। किस तरह से यूट्यूब पूरे जनमाध्यमों को एक स्थान पर समेटे हुये है जो कि यह बताता है कि यह सभी माध्यमों को एक स्थान पर लाकर खड़ा करता है। यूट्यूब के सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष की भी बात इस अध्याय में की गई है।

अध्याय तीन -: यूट्यूब का स्वरूप एवं प्रकृति

इस अध्याय के अंतर्गत यूट्यूब के द्वारा शिक्षा के कार्यों और उद्देश्यों को विस्तार से समझाया गया है। यूट्यूब शिक्षा के साधनों पर भी प्रकाश डाला गया है। इसके सामाजिक आधारों के विविध रूपों को प्रस्तुत किया गया है और उन्हें इस अध्याय में विस्तारित किया गया है। यूट्यूब द्वारा शैक्षणिक एवं अकादमिक कंटेंट को वर्तमान समय में किस-किस माध्यम से उपयोग करके विद्यार्थियों को सीखने का मौका मिल रहा है इसे भी समझाया गया है। जिसे यूट्यूब का कोई भी यूजर देखने के लिए स्वतंत्र है को भी स्पष्ट किया गया है आदि शीर्षकों के माध्यम से इस अध्याय पर शोध दृष्टि डाली गई है।

अध्याय चार -: यूट्यूब द्वारा शिक्षा के विविध पक्ष

अध्याय चार में यूट्यूब द्वारा शिक्षा के विविध पक्षों से संबंधित चीजों को रखा गया है। इस अध्याय के अंतर्गत पारंपरिक शैक्षणिक व्यवस्था के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक शैक्षणिक व्यवस्था में किस तरह से बदलाव हुये है, इसमें वेब आधारित शैक्षणिक व्यवस्था में अनेक बिन्दुओं को इसमें शामिल किया गया। और उन्हें व्याख्यायित किया गया इसमें से सभी के लिए शिक्षा, केयर इंडिया चेंज इंडिया और डार्क वेब जैसे विषय को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है। इसी अध्याय में 'मासिव ओपेन ऑनलाइन कोर्स' की भी बात की गई है जो कि अभी इसे और ज्यादा विस्तार देने के लिए कुछ बिन्दुओं को रखा गया है। अंत में यूट्यूब के अब तक से सफर शीर्षक के माध्यम से इसकी विकास यात्रा से लेकर अब तक के सफर को संग्रहीत किया है। यूट्यूब अभी बाल्यावस्था में है और इतने कम समय में इतना ज्यादा अपना विस्तार किया है इसकी कल्पना करना थोड़ा मुसकिल हो जाता है लेकिन इसने यह कर दिखया है।

अध्याय पांच -: आंकड़ों, तथ्यों का विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण

इस अध्याय में शोध के विश्लेषण तथा अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों एवं तथ्यों को सांख्यिकी पद्धति द्वारा व्यवस्थित रूप में प्रास्तुत किया है। यूट्यूब आधारित शिक्षा व्यवस्था पर छात्र-छात्राओं की राय लेते हुये उनका ग्राफ, सारणी तथा चार्ट के माध्यम से विश्लेषण किया गया है। शोध विषय का अध्ययन कर मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार के शोध आंकड़ों का

संग्रहण किया गया है। इस प्रकार एकत्र किए गए सभी आंकड़ों को अंतिम रूप देने के बाद ही शोध के अंतिम बिन्दु (निष्कर्ष) तक पहुंचा गया है।

अध्याय छः -: निष्कर्ष एवं सुझाव

छठवें अध्याय में पूरे शोध के दौरान निकले कुछ महत्त्वपूर्ण बिंदु को समाहित किया गया है। यूट्यूब शिक्षा से संबंधित छात्र-छात्राओं की राय तथा उनकी सोच और जानकारी के आधार पर जो निष्कर्ष निकला है उसे इस अध्याय में शामिल किया गया है।

1.1.2 साहित्य पुनरावलोकन

शोध विषय से संबंधित विषय में शोध करने के पूर्व इस क्षेत्र से संबंधित पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओ, शोध-पत्रों, रिपोर्टों, प्रतिवेदनों और शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित की गई सामग्री का अध्ययन किया गया है। विषय में अब तक देश-विदेश में हुए महत्त्वपूर्ण शोध कार्यों के बारे में भी जानकारी प्राप्त करने की कोशिश की गयी है। इस शोध विषय से संबंधित **शोध गंगा, जे.स्टोर** और **इरिका** जैसी अनेक वैबसाइटों का इस्तेमाल किया गया है।

Hansenaa. Margaret यूट्यूब और अन्य वेब 2.0 नर्सिंग अनुप्रयोग का अध्ययन (youtube and other web2.0 applications for nursing Education)

मार्गरेट हन्सेन (Margaret Hansen) ने यह बताने की कोशिश की है कि वेब 2.0 अनुप्रयोग जैसे काफी लोकप्रिय यूट्यूब की बदोलत (आनलाइन वीडियो नेटवर्क) मेडिकल छात्र अपने विषय से संबंधित जानकारी अध्यापकों एवं सहपाठियों से ले रहे हैं। आज के छात्र फेसबुक, माईस्पेश और यूट्यूब जैसे शोसल नेटवर्किंग साइट्स के 'ग्राहक' हैं। स्मार्ट फोन आने के बाद से आज के समय में सीखना सिर्फ आपके एक टच मात्र से दूर है। इसमें शोधकर्ता ने अपने शोध आलेख में वेब 2.0 अनुप्रयोग और उसके प्रभाव का शैक्षणिक गतिविधियों का अध्ययन किया है। यह शोध आलेख शैद्धांतिक परिपेक्ष पर आधारित है।

Azar A. Samy क्या यूट्यूब सतह शरीर रचना विज्ञान सीखने में छात्रों की मदद कर सकते हैं? (Can youtube help students in learning surface anatomy)

शोध विषय पर सामी.ए. अज़र का आलेख यूट्यूब ने 26 जनवरी, 2012 को प्रकाशित किया। आज के दौर में तैयार पाठ्यक्रम काफी संकट में है। इसलिए ज्यादातर मेडिकल छात्र अपने पाठ्यक्रमों से संबंधित जटिलता को दूर करने के लिए यूट्यूब का उपयोग कर रहे हैं। ऐसा उनके द्वारा शोध में पाया गया है। यह शोध अध्ययन 8 से 30 नवंबर 2010 की अवधि में किया गया जहां सर्फेशएनाटोमी से संबंधित प्रत्येक वीडियो को एकत्र किया गया फिर उनसे प्राप्त डाटा को सांख्यकी आधार पर विश्लेषित किया गया। इस शोध अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि सूचनाओं और सर्फेशएनाटोमी में सीखने के लिए एक वैकल्पिक माध्यम है। इससे संबंधित और भी अध्ययन सामग्री को यूट्यूब पर अपलोड किया जाना चाहिए। इससे अध्ययन और प्रभावी तरीके से किया जा सकता है।

बाबू सी. जयशंकर. मीडिया विमर्श. वर्ष 7. अंक 28. जुलाई-सितंब 'वरदान बनी सस्ती टेक्नोलॉजी'

इसमें इन्होंने कहा है कि देखा जाए तो हिंदी क्षेत्र में भी टेक्नोलाजी का प्रभाव देखने को मिल रहा है। इसकी पहुँच आम जनता तक हो रही है। और इसने दुनिया में बड़ी क्रांति मचा दी है। इसमें इन्होंने कहा है कि आज की शिक्षा व्यवस्था में जितनी तेजी से बदलाव हो रहे हैं यह सब टेक्नोलाजी के जरीए ही संभाव हो सका है। वहीं दूरस्थ और औपचारिक शिक्षण के क्षेत्र में भी नई प्रौद्योगिकी ने बड़े क्रांतिकारी परिवर्तनों को देखा गया है। इसमें वर्चुवल शिक्षा को ज्यादा ज़ोर दिया जा रहा है।

कुमारी. दीपा. मीडिया विमर्श पत्रिका. वर्ष - 8. अंक 29. अक्तूबर-दिसंबर में प्रकाशित शोध पेपर 'पढ़ें-पढ़ाएँ ... कुछ कर दिखाएँ'

इस लेख में लिखा गया है कि युवा वर्गों का लगाव पुस्तकों में न रहकर फेसबुक, यूट्यूब, ट्विटर जैसे अन्य शोसल माध्यमों पर लग रहा हैं। लेकिन यह एक सार्वभौम सत्य है कि पुस्तकें ज्ञान का भंडार होती हैं। जीवन का सत्य, विज्ञान का महत्त्व या मनोरंजन का तत्त्व सब कुछ उपलब्ध है इस किताबी दुनिया में। आज सभी कुछ यूट्यूब पर आसानी से मिल जा रहा है यह सब इंटरनेट की ही देन है। इसमें वे 15-25 वर्ष के युवाओं की बात करती हैं और अपने शोध द्वारा निकाले गए निष्कर्ष में

कहती की दुनिया में किसी भी विषय में जानकारी लेनी हो तो बस एक क्लिक के साथ पा सकते हैं।

विलानीलम जे.वी. (अनुवादक – शुक्ल. शशिकान्त) जनसंचार : सिद्धांत और व्यवहार. भोपाल: मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल

इसमें लेखक शिक्षा को जनसंचार से जोड़ने की बात विषय पर ज़ोर देते हैं उनका मानना है की इसको जोड़ दिया जाए क्योंकि शिक्षा और संचार दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू है। मीडिया शिक्षा को समृद्ध करती है, शिक्षा को संभव बनाती है और जनशिक्षा को सुदृढ़ करती है। कई विद्वानों के बीच काफी महत्त्वपूर्ण बहसों के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि न्यू मीडिया के अनेक माध्यमों के द्वारा रेडियो, टीवी, सिनेमा और सोशल नेटवर्किंग साइटों के माध्यम से दूर शिक्षा (Distance Education) और यूट्यूब के वीडियो से पूर्ण की जा सकती है।

एंडरसन. बेनेडिक्ट. इमेजिन्ड कम्युनिटी. नई दिल्ली. शिल्पी ग्रंथ

बेनेडिक्ट एंडरसन जैसे विद्वान ने अपनी किताब इमेजिन्ड कम्युनिटी में राष्ट्र को एक काल्पनिक समुदाय (इमेजिन्ड कम्युनिटी) से ज़्यादा कुछ नहीं मानते हैं। दरअसल राष्ट्र भाषा, संस्कृति और भौगोलिकता समरूपता के आधार पर अपनी एक अस्मिता का निर्माण करता है। लेकिन इस अस्मिता के निर्माण में हमेशा समाज के प्रभावशाली तबके अपनी भूमिका निभाते हैं। ग़रीब और वंचित लोगों के लिए किसी राष्ट्र का कोई मतलब नहीं होता। राष्ट्रीयता की अवधारणा आगे बढ़कर आधुनिक राष्ट्र राज्य के रूप में सामने आयी। आधुनिक राष्ट्र राज्यों का उदय सामंतवाद से पीछा छुड़ाकर हो रहा था। उसी दौरान राष्ट्र राज्य की सम्प्रभुता का दावा भी सामने आया और इसे एक तरह से सार्वभौमिक सत्य की तरह पेश करने की कोशिश शुरू हुई।

जैफ्री. राबिन. मीडिया एंड मॉडर्निटी. नई दिल्ली. वाणी प्रकाशन

राबिन जैफ्री अपनी किताब मीडिया एंड मॉडर्निटी में वे इस बात का ज़िक्र विस्तार से करते हैं कि पूरे भारतीय भूभाग में भाषाई विविधता के बावजूद किस तरह बाक़ी

राजनीतिक-सांस्कृतिक प्रतीक मीडिया की मदद से एक साझेपन का भाव पैदा करते हैं। वह यह भी पहचानने की कोशिश करते हैं कि किस तरह बड़ी पूंजी पर टिका मीडिया अपने हित में भारतीय राष्ट्रवाद का प्रवक्ता बनकर काम करता है। यहीं पर मीडिया के स्वार्थों का एक बिल्कुल स्पष्ट अंतरविरोध सामने आता है, एक तरफ तो कॉरपोरेट मीडिया युद्धोन्माद पर टिके दक्षिणपंथी राष्ट्रवाद को हवा देता है लेकिन वहीं साम्राज्यवाद और बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आगे समर्पण को वह राष्ट्र का विकास मानता है। देशभर के संसाधनों की लूट में जुटी बहुराष्ट्रीय कंपनियों का हमदर्द बनने की पीछे यह एक मुख्य कारण है।

पचौरी. सुधीर. साइबरस्पेश और मीडिया. नई दिल्ली. राधा कृष्ण प्रकाशन

सुधीश पचौरी ने अपनी किताब साइबरस्पेश और मीडिया में कहते हैं कि आज भाषाओं में तेजी से बदलाव हो रहा है। फिर चाहे क्यों न विषय की भाषा हो, मीडिया की भाषा हो सभी बदल रहीं हैं। वे कहते हैं कि इंटरनेट पर हिंदी को आए कुछ ही वर्ष हुए हैं इसने अपना विकास तेजी से किया है। वहीं दूसरी तरफ वे ये भी कहते हैं कि मीडिया अब मिशन नहीं है, उद्योग है ,प्रोफेशन है, को अभी झुठलाया नहीं गया है। आगे कहते हैं कि नए मध्यमों को तलाशने की कोशिशें लगातार की जा रही है।

चतुर्वेदी, जगदीश्वर & सिंह सुधा. जनमाध्यम सैद्धांतिकी. अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड. नई दिल्ली

जगदीश्वर चतुर्वेदी ने इस पुस्तक के पेज नंबर में संचार माध्यमों का लोगों के 43 मनोमस्तिष्क पर किस प्रकार का प्रभावपड़ता है इसे इंगित किया है। लेखक एक बड़े सिद्धांतकार विलियम्स कोट करते हुए कहते हैं कि, उनकी राय है कि अगर माध्यम, चाहे वह प्रेस हो या टीवी, कारण हैं, और सभी कारणों के कारण हैं तो इतिहास का एक सामान्य विद्यार्थी देख कर समझ सकता है कि यह प्रभाव का संकुचन करना होगा। इसी तरह अन्य क्षेत्रों के प्रभाव को किस तरह देखते हैं? यह महत्त्वपूर्ण है। यह हमारे मन में सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और नैतिक दृष्टिकोण से प्रश्न पैदा करता है। क्या इस तरह के प्रश्नों को खारिज करके सिर्फ माध्यमों के प्रत्यक्ष मानसिक प्रभाव को ही स्वीकृति दें।

हर्मन और चोम्सकी. मैन्युफैक्चरिंग कंसेंट: पॉलिटिकल इकोनॉमी ऑफ मास मीडिया. शिल्पी ग्रंथ. दिल्ली

प्रख्यात अमेरिकी विद्वान हर्मन और चोम्सकी अपनी किताब मैन्युफैक्चरिंग कंसेंट: पॉलिटिकल इकोनॉमी ऑफ मास मीडिया में कहते हैं कि बड़ी पूंजी पर टिका मास मीडिया जनता में किस तरह झूठी सहमति या राय का निर्माण करता है। वह असली मुद्दों से ध्यान हटाकर पूंजीवादी शिक्षा नीतियों का प्रोपेगेंडा करता है। यहां तक कि अब यह भी कहा जाने लगा है कि पूंजीवादी मीडिया सहमति का ही निर्माण नहीं करता बल्कि वह असहमति का भी निर्माण करने लगा है। अगर जनपक्षीय भविष्य का कोई सपना देखता है तो वह मीडिया को जनपक्षीय बनाने की लड़ाई छेड़े बिना संभव नहीं हो सकता। इसके लिए अनिवार्य तौर पर मीडिया के पूंजीवादी शिक्षण व्यवस्था जैसी स्वामित्व का ख़ात्मा करना होगा।

चतुर्वेदी, जगदीश्वर & सिंह, सुधा. जनमाध्यम सैद्धांतिक अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स. नई दिल्ली

इस पुस्तक में जगदीश्वर चतुर्वेदी ने टेलीविजन के उदय के तकनीकी अंतरों को दर्शाते हुए उसके सांस्कृतिक प्रभाव की चर्चा करते हैं। वह कहते हैं किसी नई खोज को सांस्कृतिक परिवर्तन का कारण नहीं मान लेना चाहिए, साथ ही जनसंचार माध्यम की तकनीकी को समझने के लिए ऐतिहासिक बोध से काम लेना चाहिए। हमें उसकी अभिव्यक्ति को सामाजिक व्यवस्था के तहत विशेष हितों से जोड़कर देखना चाहिए। अगर माध्यम का प्रभाव एक समान होता है तो उसका नियंत्रण किसी के हाथ में हो या कोई भी उसका इस्तेमाल करे और ऊपर से चाहे जिस अंतर्वस्तु के कार्यक्रम दिखाए तब तो हमें सामान्य राजनीति और सांस्कृतिक तर्कों को छोड़ देना चाहिए और सिर्फ यही देखना चाहिए और तकनीकी स्वयं ही काम करे।

डॉ. अरोड़ा. हरीश बाजार और टेलीविज़न पत्रकारिता का संकट. नई दिल्ली. युवा साहित्य चेतना मण्डल

लेखक ने अपनी इस पुस्तक में टेलीविज़न पर प्रसारण के प्रारूप को बताया है। वे कहते हैं 'टीवी ने वस्तुतः रूढ़िगत प्रसारण के नियमों का ही पालन किया है। दर्शकों को वैयक्तिक रूप में ही कोड किया, साथ ही कार्यक्रम का ढाँचा वैचारिक ढंग से तैयार किया और प्रश्न भी विचारधारात्मक थे। कार्यक्रम दर्शकों को व्यक्तिगत विषय के स्तर पर देखता है और साथ ही उन्हें एक काल्पनिक जनतांत्रिक समुदाय में भाग लेने को आमंत्रित भी करता है। मसलन टेलीविज़न समाचार पर किए गए अनेक शोध कार्य इस तथ्य को रेखांकित करते हैं कि समाचार सैंपलिंग के रूप में शाम के समाचार को सुना गया क्योंकि ब्रेकफ़ास्ट समाचार, लंच समाचार, अपराह्न समाचार या संक्षिप्त समाचारों की तुलना में शाम के समाचार को ज्यादा दर्शक देखते हैं'।

हर्मन. एडवर्ड एस. मैकचेसनी. भूमंडलीय जनमाध्यम निगम पूंजीवाद के नए प्रचार राजकमल प्रकाशन. नई दिल्ली

भूमंडलीय संचार माध्यम निगम विस्तार को नए देशों, क्षेत्रों और बाज़ारों में निगम निर्मित बिक्री योग्य सामाग्री का विज्ञापन करते हुए सुचारु बनाते है । दूसरी तरफ भूमंडलीय जनमाध्यम के समाचार और मनोरंजन एक ऐसा सूचनात्मक और विचारधारात्मक माहौल बनाते है, जो मालों के विक्रय के लिए उपयुक्त राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक आधार बनाए रखने में मददगार साबित होता है साथ ही सामाजिक व्यवस्था को नए आयाम प्रदान करता है।

1.3.1 शोध का उद्देश्य एवं महत्त्व

I. शैक्षणिक आदान-प्रदान के माध्यम के तौर पर यूट्यूब की प्रभावशीलता का अध्ययन।
II. यूट्यूब पर शैक्षणिक विषयवस्तुओं का अध्ययन।
III. यूट्यूब शैक्षणिक उपकरण (टूल) के रूप में किस प्रकार सहायक सिद्ध हो रहा है।

IV. यूट्यूब पर शैक्षणिक वीडियो का दर्शकों पर होने वाले लाभ का अध्ययन।
V. यूट्यूब पर छात्र मनोरंजन के अलावा शिक्षण संबंधी जानकारी लेते है इसका पता लगाना।

1.1.4 शोध की प्रासंगिकता

शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष भविष्य में नए मीडिया पर आधारित शैक्षणिक गतिविधियों से संबंधित शोधों के लिए आधार का काम करेगा। इस अध्ययन का आकादमिक महत्त्व भी होगा। नतीजतन विकसित देशों के तर्ज पर भारत के मौजूदा विश्वविद्यालय अपने खुद के ऐसे कार्यक्रम बना कर यूट्यूब पर डालें। इससे शिक्षा के स्तर का विस्तार होगा और देश के विकास में लाभकारी होगा। यूट्यूब सरल, सुलभ और सुगम होने के कारण इसकी पहुँच ज्यादा से ज्यादा लोगों तक है। इस शोध के जरिए यह समझने की कोशिश की गयी है कि शैक्षणिक चैनल कितने सफल हो सकते है? लोगों को इसकी जरुरत कितनी है? लोग कितना इसे पसंद करेंगे और किस प्रकार की सामाग्री उपलब्ध है? विद्यार्थियों को इसकी आवश्यकता किस प्रकार है।

1.1.5 शोध प्रश्न

I. यूट्यूब में किस प्रकार की शिक्षण सामग्री देखी जाती है?
II. यूट्यूब पर उपलब्ध शिक्षण सामग्री छात्रों के लिए कितना लाभकारी है?
III. यूट्यूब पर छात्र वीडियो देखने के लिए किस उपकरण का उपयोग करते है?
IV. यूट्यूब पर उपलब्ध वीडियो को छात्र कितना विश्वसनीय मानते है?

1.1.6 सैद्धांतिक रूपरेखा

किसी भी संदेश के लिए यह जरूरी है कि उसे प्रभावी तरीके से प्रेषित किया जाए। प्रेषित करने की इस कड़ी में माध्यम और विषयवस्तु दोनों ही महत्त्वपूर्ण होते हैं। इस बात की पुष्टि तमाम संचार विषयविशेषज्ञों ने अपने-अपने संचार मॉडल और सिद्धांत के माध्यम से प्रमाणित करने की कोशिश की है। इस कोशिश की कड़ी में वरिष्ठ संचार विशेषज्ञ **मार्शल मैकलुहाल** के सिद्धांत को प्रतिपादित करना महत्त्वपूर्ण है जिसमें वे कहते हैं कि **'माध्यम ही संदेश है'** यानि

माध्यम की उपयोगिता किसी भी संदेश के लिए महत्त्वपूर्ण होती है। ठीक यही सिद्धांत यूट्यूब संचार माध्यम के लिए भी समझा जा सकता है। जहां माध्यम की प्रभावशीलता इसकी लोकप्रियता फिर चाहे शैक्षणिक कार्यक्रम हो या चैनल हो या फिर माध्यम के लिए जरूरी है।

1.1.7 उपकल्पना

I. यूट्यूब द्वारा शिक्षण कार्य प्रभावी तरीके से किया जा रहा है।
II. यूट्यूब शिक्षा के लिए सरल, सुलभ और सुगम माध्यम है।
III. यूट्यूब के आने से शिक्षा क्षेत्र में व्यापक जागरूकता बढ़ी है।

1.1.8 शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध अनुमापन, तथ्य-विश्लेषण तथा सैंपलिंग के माध्यम से प्रारूप प्रदान करने का प्रयास किया गया। शोध कार्य के लिए तुलनात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया। यह शोध यूट्यूब द्वारा शैक्षणिक विकास: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन विषय पर केंद्रित है। इस विषय के द्वारा शोध के दौरान यूट्यूब उपयोगकर्ता के लिए लाभकारी और विश्वसनीय है साथ ही यह सरल, सुलभ और सुगम माध्यम है। यह शोध अध्ययन इन्हीं बिन्दुओं पर आधारित है। शोध अध्ययन की प्रकृति के अनुसार गुणात्मक और मात्रात्मक शोध का प्रयोग किया गया है। आँकड़े संग्रहण के लिए शोधार्थी द्वारा विश्वविध्यालय के विद्यार्थियों एवं शोधार्थिओं का चयन किया गया है। इन उत्तरदाताओं के अनुसार आँकड़ों को विश्लेषित किया गया है। SPSS जैसे साफ्टवेयर का प्रयोग किया गया है। यूट्यूब को देखने वाले विद्यार्थियों से साक्षात्कार भी लिया जाएगा। शोध के लिए विभिन्न वैज्ञानिक प्रविधियों के साथ-साथ शोध में गुणात्मक और मात्रात्मक विधियों का प्रगोग किया गया है। जिसमें से कुछ महत्त्वपूर्ण प्रविधियों का विवरण नीचे दिया जा रहा है –

I. **अवलोकन (Observation Techniqe) :** अवलोकन प्रविधि से शोध विषय 'यूट्यूब और शैक्षणिक विकास: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन' के वीडियो को देखकर उसके विषयवस्तु को समझा गया। इस विधि के अंतर्गत विभिन्न शैक्षणिक वीडियो को देखकर उनका अध्ययन किया गया है। हिंदी विश्वविध्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को लिया गया। इस प्रविधि में तथ्य संकलन

हेतु अध्ययन का दृष्टिकोण तटस्थ व निष्पक्ष है। इसके माध्यम से विश्वविद्यलय में यूट्यूब वीडियो को देखना, और उसके अनुरूप विश्लेषण किया गया। यह शोध कार्य यूट्यूब सोशल नेटवर्किंग साइट पर आधारित है। इसमें अनियंत्रित प्रेक्षण विधि (Uncontrolled Observeation) और असहभागी प्रेक्षण विधि (Non Participant Observation) के माध्यम से विश्लेषण किया गया।

II. **सर्वेक्षण विधि (Sarvey Techniqe) :** इस विधि के माध्यम से चयनित शोध क्षेत्र (हिंदी विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों और शोधार्थियों) में उत्तरदाताओं से विभिन्न प्रश्नों का जवाब लिया गया। जिसमें शोध विषय 'यूट्यूब और शैक्षणिक विकास: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन' पर अध्ययन किया गया। इसके अंतर्गत प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

III. **साक्षात्कार (Interview) :** शोध विषय से जुड़े व्यक्तियों का साक्षात्कार लिया गया जो निजी अनुभव और विचारों पर आधारित है। इसमें यह जानने की कोशिश की गयी कि शैक्षणिक वीडियो विद्यार्थियों के लिए कितने लाभकारी और विश्वसनीय हैं। जिससे की शोध विषय में प्रामाणिकता की पुष्टि हो सके क्योंकि यह तथ्य संकलन की मौखिक विधि है।

IV. **विषयवस्तु विश्लेषण (Content Analysis) :** विषयवस्तु विधि में यूट्यूब और शैक्षणिक विकास: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन में वीडियो को देखकर उनका विश्लेषण किया गया। इसके द्वारा दस्तावेज़ और साक्षात्कार विधियों की सहायता से शोध को पूरा कियागया।

अतः इन विधियों के इस्तेमाल से यूट्यूब की आंतरिक और बाह्य परिदृश्य का खाका आसानी से प्राप्त हो सकता है। जिसमें सामाजिक और शैक्षणिक प्रभाव के विश्लेषण के साथ आने वाली भविष्य की संकल्पना शामिल है।

1.1.9 शोध का क्षेत्र

प्रस्तुत शोध मुख्य रूप से सोशल नेटवर्किंग साइट यूट्यूब पर आधारित है। शोध में यूट्यूब पर प्रसारित होने वाले शैक्षणिक कार्यक्रम को आधार माना गया है। शोध में सैंपल के रूप में सिर्फ विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों व शोधार्थियों को शामिल किया गया। शैक्षणिक वीडियो से लाभ को जानने के लिए यूजर से उनकी राय लेने के लिए 100 विद्यार्थियों से प्रश्नावली के माध्यम से जानने की कोशिश की गयी है।

1.1.10 शोध की सीमाएं

इस शोध की कोई भौगोलिक सीमा नहीं है। यह शोध कार्य इंटरनेट पर आधारित है। आज इंटरनेट के चलते समूची दुनिया ग्लोबल विलेज बन गयी है। इस शोध कार्य के लिए विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को ही लिया गया है। जिसमें से 50-50 एम. ए., एम. फिल., और पीएच. डी. के 17,17, 16 के अनुपात में छात्र-छात्राओं को शामिल किया गया है। यह शोध कार्य हिंदी विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों पर आधारित है।

1.1.11 शोध समस्या

शोध पूर्ण रूप से सोशल नेटवर्किंग साइट से संबंधित है जिसमें इंटरनेट की विशेष जरूरत महसूस हुई। अतः नेट की सुविधा के अभाव में यह एक बड़ी समस्या के रूप में सामने आया। विषय नया होने के कारण संबंधित साहित्य उपलब्धता में भी काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। इसके अलावा सैंपल साइज को लेकर भी काफी दिक्कत का सामना करना पड़ा जिसका सीधा कारण उन छात्र-छात्राओं को समाहित करना था जो सीधे तौर पर यूट्यूब से जुड़े हों।